प्रदीनी में पूछते हो होंगे कि किस आधार पर कहते हो विनाश होगा वा किस आधार से कहते हो श्रेष्टचारी दुनियां स्थापन हो रही है। बोलो भगवानोवाच्य लगा हुआ है। कल्प-2 बाबा ज्ञान सागर जिनको दुःख कहा जाता है उनको बुलाते है। समझा भी सकते हो अब कलियुग है। सतयुग में थोड़े मनुष्य होंगे। प्रजा पिता ब्रहमा दवारा एक धर्म की स्थापना होती है। हम ब्रहमा कुमारियां है। हमको पढ़ाने वाला वो निराकार पतित पावन है। वो कहते है मुझे याद करो तो विधर्म विनाश होंगे। मूल बात ही है पावन बनने की सतो प्रधान बनने की। सतोप्रधान दुनियां स्थापन होनी है जरूर। 9वीं लगें वा 10वीं लगें। पहले तो पुरुषार्थ में लगना है। विनाश तो होना ही है। पहले ब्राहम्ण तो बनो, वर्से का हकदार तो बनो। बाप का बनने से बाप दवारा सब कुछ जान जावेंगे। जो रचना और रचता की आद मध्य अन्त को ना जाने वो तो इडियट ठहरे। भक्ति मार्ग में भगवान को कितनी गाली देते आये है अब उनका वर्सा सिवाय तुम ब्राहम्णों के और तो को ले नही सकते। तो तुम अब उनको स्वयं गाली देते हो। एक गाली होती है जिससे मनुष्य को गुस्सा लगे। तुच्छही गाली सुनकर खुश होंगे। बाबा रावण कहते है, अठाचारी कहते है, ऐप्स कहते है। यह गाली है नां। वो भी कह देते कदर में भी भगवान है सबमें भगवान है। तो उनको रिटर्न में गाली तो तुम भी दे सकते हो। यह हसी खुशी की बात है। नाटक देखा जाता है खुशी के लिये। तुम बच्चों को भी समझ आई है। अभी समय पड़ा है। बहुत लिखते है बाबा तूफान आते है, माया आती है। बाप क कहते है माया वार करेगी। यह इसायें बैठती हैनां। आती सबको है। कब देखो बहुत मजे में है। कब विघ्न पड़ने से ठण्डे हो जाते है। सदैव आनन्द में रहे ऐसे कब हो नही सकता। सदैव आनन्द तो तब होगा जब कर्मातीत अवस्था होगी। यहां तो माया की चोटें बहुत लगती है, मरहम की जाती है। यह लड़ाई है माया रावण पर जीत पाने की। यह है मनमनाभव की संजीवनी बूटी। याद में रहना है, इसीमें ही खुशी है। याद में नां रहने से मरहम नही होती है लिखा हुआ भी है शिव भगवानोवाच्य। वो ही ज्ञान सागर पतित पावन सब का सदगती दाता है। रचता ही रचना को वर्सा देते है। मुख्य बात है मेहनत की। बच्चे बच्चे आशीर्वाद कृपा मांगते है। उनको भी समझाया जाता है कि टीचर क्या कृपा करेंगी। अच्छा पढ़ोगी तो अच्छा पद पाओगी। आत्मायें जितना बाप से योग लगाती रहेगी उतना बाप से पद भी ऊचा पावेंगी। प्यार के सागर बाप को याद करेंगे तो तुम भी प्यार का सागर बन जाओगे। पतित पावन बाप को जितना याद करेंगे उतना पावन बन जावेंगे। बाप ने समझाया है कि योगबल से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। योगबल से हम माया पर जीत पाते है। हथियारों की बात नही है। यह बहुत सहज है। बाप को याद करना है, पवित्र बनना है, दैवी गुण धारण करने है। दिल से पूछना है मै ऐसा हूं। समझो जो होंगे वो अपने गुण भरते रहेंगे। बाकी जो होंगे वो कल्प-2 प्रारब्धका घाटा पावेंगे। बाप जमाह (+) कराते है माया रावण घाटा (-) डाल देती है। यह भी बच्चों को मालूम है फायदा कितना है घाटा कितना है। समझो बच्चे फायदा ही जमाह करते है। छुपे नही रह सकते। बैंक भरते रहते है। अपना नही भरा हुआ होगा तो दूसरों को कैसे भरेंगे? सीख कर फिर औरों को सिखाना है। बाबा ने बुधी का ताला खोला है। सर्विस में लगे रहो बाप को याद करते रहो तो बुधी का ताला खुल जावेगा। नही तो फिर ताला बन्द हो जाता है। खुशी होगी जिनकी याद की यात्रा अच्छी होगी। रेस है रूद्र माला में पिरोने लिये। जितना बहुत याद करेंगे उतना नजदीक पहुच जावेंगे। चोटि रख कर देखो। बहुत कम है तो जो चोटि लिखते है। लिखना है बहुत अच्छा। अज्ञान काल में भी कोई-2 रोजाना जीवन कहानी लिखते है। योगी बनने का वक्त रहती है सब समझाने की। योगी का तीर तीखा लगता है। योगी नही होंगे सिर्फ मुरली चलाने वाले हो गे तो ताकत कम होगी। इसलिये भारत का प्राचीन योग मशहूर है। दुनियां तो जानती नही योग कौन सिखाते है। नाम रूप कृष्ण का कह देते है। यह मूल डामा में है। ओम